

MESSAGE FROM THE PRINCIPAL

14th September, the day Hindi was adopted as the official Language of the Republic of India by our Constituent Assembly, is celebrated annually as the Hindi Diwas. Google about it, you come to know a lot more but our children tell you more through their creative writings and projects done through this month. Read and appreciate the Devanagari script adorning this issue of Deen-a-Logue.

वर्षा आई

वर्षा आई वर्षा आई,
आओ झूमें वर्षा आई,
पानी में हम कूदें छप छप,
बूँदें गिर रहीं हैं टप टप।

छतरी छोड़ो छतरी छोड़ो,
बाहर आओ आनन्द लेलो,
माँ बना रही चाय पकौड़े,
बाहर टर्रा रहे कीड़े मकौड़े।

मेंढक कूद रहे छम छम,
पैर फिसला गिर गये हम,
नाँव बनाकर मित्र आया,
बिजली गरजी बादल छाया।

इंद्रधनुष खिला सुंदर सा,
झूम झूम के मोर नाचा,
हर जगह है खुशियाँ छाई,
धरती ने सुंदर छवि पाई।

कवयित्री - जपलीन कथूर ६ सी

मेरी माँ

माँ आपका स्नेह पा कर मन पुलकित हो जाता है!

ओस की बूँदों सी निर्मल माँ की आसीस पा कर मन तृप्त हो जाता है।

आपका प्रोत्साहन जीवन में नए मार्ग दिखता है।

आप में सूरज सा तेज है, और चाँद सी शीतलता,



क्योंकि तुम्हें सब है पता मेरी माँ।

माँ कि आँखों में कितना प्यार,

माँ का मन कितना निर्मल,

माँ कि बातें कितनी मीठी,

माँ का स्पर्श कितना सुखद,

माँ का दिल कितना प्यार भरा,

माँ कि हाथ कितने सुन्दर,

माँ के चेहरे में कितना नूर,

माँ कि फूलों वाली साड़ी कितनी कोमल,

माँ कि झप्टी जादू की,

माँ कि ममता सबसे न्यारी।



अक्सर मैं यह सोचती हूँ, मैं भी माँ कि तरह बन जाऊँ।

आप प्रेरणा भी है, गुरु भी,

आप शक्ति भी है, सखी भी,

आप मार्गदर्शिका भी है, ममता कि छाँव भी,

इसलिए क्योंकि आप माँ हैं। इसलिए ईश्वर ने माँ बनाई,

क्योंकि वे जानते हैं, माँ ही इतना निश्चल प्यार कर सकती हैं। सिर्फ माँ।



मेरी मम्मा

बड़ी प्यारी है मम्मा मेरी
ताज़ा भोजन खिलाती है।

मीठी-मीठी लोरी गा कर
मुझको रोज सुलाती है।

जब भी मैं कही अटक जाऊ
मुझको राह दिखाती है। बड़ी प्यारी

रोज नई पुस्तक पढ़कर
मेरा ज्ञान बढ़ाती हैं।

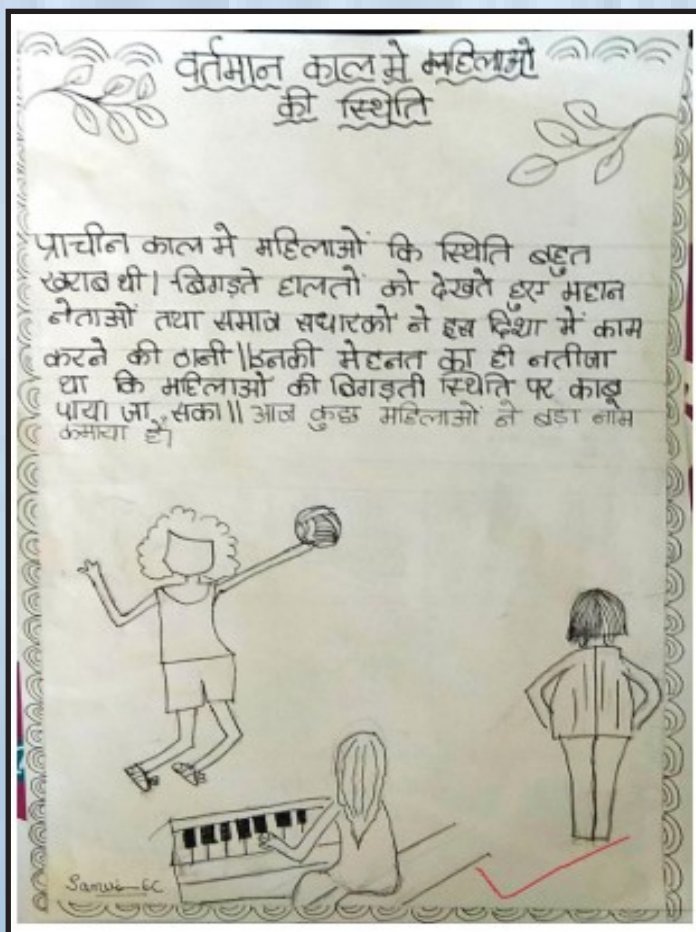
गणित, विज्ञान और भाषाओं के साथ
कंप्यूटर भी सिखाती है।

बड़ी प्यारी है मम्मा मेरी
जो मुझको सहज बनाती है।

औजस्व शर्मा
7th D

-जपलीन कथूर, कक्षा ६सी





मेरा उपवास

हर धर्म में कुछ खास दिनों में उपवास किए जाते हैं उसी तरह जैन धर्म में भी १० दिनों का एक त्योहार मनाया जाता है जिसे पर्युषण कहते हैं और उस दौरान उपवास किया जाता है।

मैंने भी इस बार उपवास करने का सोचा। मैं अपने माता-पिता के साथ उपवास करना चाहता था ताकि मुझे उपवास करने में साथ मिल सके।

मैंने पिछली बार भी उपवास करने का सोचा था लेकिन मैं विफल रहा। इसलिए मैंने इस बार एक योजना बनाई। इस योजना के तहत मैंने उपवास स्कूल की छुट्टी के दिन करने का सोचा। इसका कारण था छुट्टी के दिन में देर तक सोकर उठ सकता था। उसके अलावा मैं कई घंटों तक कंप्यूटर पर गेम्स खेल सकता था ताकि मैं खाने के के ख्याल से दूर रह पाऊं। छुट्टी के दिन मुझे पढ़ाई की भी चिंता नहीं थी। अक्सर पढ़ाई के दौरान मेरे शरीर से सारी ताकत निकल जाती है इसीलिए मैंने उपवास छुट्टी के दिन किया।

उपवास के दिन मैं सुबह 11:00 बजे सो कर उठा। जब मेरा मन शांत था मैंने अपनी कुछ पढ़ाई समाप्त कर ली।

दोपहर के खाने के समय तक मेरे मन में भूख की कोई चाह नहीं हुई। लेकिन जब मैंने अपने भाई को खाना खाने के समय रसगुल्ले और अलग-अलग व्यंजन खाते हुए देखा तो अचानक मुझे भूख लगने लगी।

दोपहर बाद मैंने कंप्यूटर पर गेम खेलना शुरू किया। यह 3 घंटे मुझे 3 मिनट से भी कम लगे। इस कारण मुझे अपने आसपास की गतिविधियों और भूख का कोई एहसास नहीं हुआ।

शाम को 5:00 बजे के समय मैंने थोड़ी देर पढ़ाई करने की कोशिश करी। जिस तरह एक छोटा सा छेद भी बड़े टैंकर का सारा पानी निकाल सकता है उसी तरह चंद मिनट की पढ़ाई से मेरे शरीर की सारी ऊर्जा निकल गई।

वैसे तो मुझे चंद मिनटों की पढ़ाई भी कई घंटों सी लगती है लेकिन उपवास के दिन यह कुछ मिनट की पढ़ाई मुझे कुछ दिनों जैसी प्रतीत हुई।

बीच-बीच में जब मैं रसोई घर जा कर पानी पी रहा था वहां पड़ी वस्तुओं और सब्जियां मुझे आकर्षित कर रही थी। कुछ सब्जियां जैसे कि ककड़ी जो कि मैं नापसंद करता हूं वह भी मुझे याद आ रही थी। शाम होते-होते मैं अगले दिन के खाने के बारे में सपने देखने लगा।

वैसे तो खाने की चीजों की सुगंध मुझे कम ही आती है लेकिन उपवास के दिन मुझे हर सब्जी फल पकवान की सुगंध खूब तेज आ रही थी।

अगर मुझे किसी दिन सिर दर्द होता है मेरी मनपसंद चीज करते हुए वह चले जाता है लेकिन उपवास के दिन टीवी देखते समय, कंप्यूटर गेम्स खेलते हुए भी मुझे सिर दर्द की अनुभूति होती रही।

शाम होते-होते मेरा पेट मुझसे बातें करने लगा। वह अलग-अलग आवाजें निकालने लगा यह बताने के लिए कि आज मैं उसे भूल गया हूं।

रात होते-होते मुझे बहुत थकान महसूस होने लगी और ऐसा लग रहा था जैसे मैं बहुत शारीरिक श्रम करके आया हूं।

अक्सर मैं चाहता हूं कि मेरी शाम लंबी रहे ताकि मैं अपना मनोरंजन कर सकूं लेकिन उपवास के दिन मैं चाहता था कि जल्दी से सो जाऊं और अगले दिन भोजन कर सकूं।

लेकिन उस दिन तो मुझे नींद आ ही नहीं रही थी। इसके दो कारण थे - एक सुबह काफी देर से उठना और दूसरा मैं खाली पेट था।

स्कूल के दिन में मेरे माता-पिता मुझे बड़ी मुश्किल से उठाते हैं लेकिन उपवास के अगले दिन मैंने सुबह सुबह ही अपने माता-पिता को उठा दिया।

मेरी मेरी मम्मी ने सुबह मुझे नमकीन मूंग और आटे का हलवा दिया। यह व्यंजन मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है लेकिन उपवास के अगले दिन इन्हें खाकर मुझे पिज्जा खाने से ज्यादा सुकून और आनंद मिला।

खाने का एक निवाला जब मैंने अपने मुंह में डाला तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे शरीर में नई जान आ गई।

इस उपवास के पहले भी मैंने दो दफा उपवास करने की कोशिश की थी लेकिन मैं विफल हुआ था। इस बार मुझे उपवास करके ऐसी उपलब्धि लग रही थी जैसे भारतीय सेना ने अपने शत्रु को हरा दिया हो।

कोरोना योद्धाओं को शत शत नमन

ए: मेरे वतन के लोगों,
ज़रा आँख में भर लो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी,
ज़रा याद करो कुर्बानी। जय हिंद।

एक छोटा सा दुश्मन जीव, जो हमें दीखाई भी नहीं देता, हमारे अंदर घुसकर कितनी तबाही फैला देता है। वह हमारे नाक, कान, मुँह, आँख और त्वचा से हमारे अंदर घुस सकता है। हमारे अंदर कोरोना वायरस का एक जीवाणु नाक से जा कर, एक से हज़ारों में पैदा हो जाते हैं और हमारे फेफड़ों में पूरी तरह से फैल जाते हैं। जब ये बहुत फैल जाते हैं तब हमें साँस लेने में तकलीफ होती है। हमें ये इतना बीमार कर देते हैं कि जान बचाना मुश्किल हो जाता है। एक से दूसरे को हो जाता है जब हम छींकते हैं। इस तरह से ये सारे विश्व में महामारी की तरह फैलता चला गया। इस बीमारी से हमें बहुत तकलीफ हो रही है। अब ऐसा वक्त चल रहा की हमें घरों में बंद रहना पड़ रहा है और विध्यालय भी इंटरनेट पर है। सभी लोग घर से कम्प्यूटर पर काम कर रहे हैं। इस महामारी में बहुत से लोगों की जानें जा रही हैं।

हमारे बहुत से कोरोना योद्धा इस विश्व महामारी से लड़ने में हमारी मदद कर रहे हैं जैसे की डाक्टरज़, नर्सज़, सफ़ाई कर्मचारी, समाचार संवाददाता और भी बहुत सारे अन्य लोग अपनी जान को खतरे में डालकर पूरी दुनिया को सुरक्षित रखने की कोशिश कर रहे हैं। हमें उनका आदर करना चाहिए। हमें उनकी बात मानकर घर में रहना चाहिए। नया सामान कुछ समय के लिए दूर रख कर इस्तमाल करना चाहिए। हमेशा मुँह में मास्क पहन कर ही बाहर जाना चाहिए। बार बार हाथ साबुन से धोने चाहिए। डॉक्टर्स हज़मत सूट पहन कर लोगों की जान बचा रहे हैं अपनी जान को खतरे में डाल कर। हमने कभी उनका ताली और थाली से स्वागत किया तो कभी ९ दिव जलाकर उनको नमन किया। घर सामान पहुँचा रहे हमारे सामाज सहायक अपनी जान पे खेल के हमारी मदद कर रहे हैं। आज देश की रक्षा ये सारे योद्धा कर रहे हैं। बहुत से पुलिस कर्मचारी भी हमारी मदद करते हुए शहीद हो गए हैं। इस सुंदर गीत की कुछ पंक्तियाँ समर्पित है हमारे कोरोना योद्धाओं के लिए

मेरा कर्मा तू, मेरा धर्मा तू,
तेरा सब कुछ मैं, मेरा सब कुछ तू,
हर करम अपना करेगे, ए वतन तेरे लिए,
दिल दिया है जान भी दोगे ए वतन तेरे लिए

हमारी सारी आदरणीय शिक्षिकाएँ कितनी मेहनत कर के हमें इंटरनेट पर पढ़ाती हैं और देश कि आनेवाली पीढ़ी का निर्माण कर रही हैं। हमें नयी आशाएँ दे रही हैं। वे हमें हर पल आगे बढ़ने में मदद कर रही हैं। हमें होसला देते हुए हमारे मन में ये विश्वास जगा रही हैं कि ..

कहाँ तक ये मन को अंधेरे छलेंगे,
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे,
कभी सुख कभी दुख यही ज़िंदगी है,
ये पतझड़ का मौसम घड़ी दो घड़ी है,
नये फूल कल फिर डगर में खिलेंगे,
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे.....

इस विश्व के सारे कोरोना योद्धाओं को हम सभी का शत शत नमन और प्यार भरा प्रणाम। इस कोरोना वायरस का टीका ईजाद करने में पूरा विश्व लगा हुआ है और बहुत तेज़ी से इस पर काम हो रहा है। ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है की हमें जल्दी से जल्दी इसमें सफलता मिले और इस महामारी से हमें मुक्ति मिले। किसी ने क्या खूब कहा है "आखिर वक़्त ही तो है गुज़र जायेगा।"

अनहद कथूर, कक्षा ६इ



क्या पशु-पक्षियों को पालना उचित है या अनुचित?

कहा जाता है कि पशु ऐसे अच्छे दोस्त हैं-वे कोई प्रश्न नहीं पूछते, नही कोई आलोचना करते हैं। पशु इंसान के साथ संगत हैं, इसी कारण मनुष्य इन्हें पालते हैं। परन्तु आपने कभी सोचा है, क्या इन्हें पालना उचित है? मेरे विचार से पशु-पक्षियों को पालने के फायदे हैं और नुकसान भी। हम जानवरों को अच्छा माहौल और आहार देते हैं, और उनकी देखभाल करते हैं। बदले में जानवर और मनुष्य के बीच गहरी मित्रता बन जाती है और वे एक-दूसरे की प्रेम और रक्षा देते हैं।

परन्तु, प्रकृति ने जानवरों को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाया है। वे पिंजरे में बंद होने के लिए नहीं बने हैं। अगर हम उन्हें पालतू बनाकर उन्हें सारी सुख-सुविधाएँ प्रदान कर दें, तो वे हम पर निर्भर होकर आत्मनिर्भर होना भूल सकते हैं।

जानवरों का पालने की जगह, हम सड़क के जानवरों की मदद कर सकते हैं, छोटे-छोटे तरीके से, जैसे इन्हें खाना खिलाना।

अतः, मुझे लगता है कि एक सीमा तक ही पशु-पक्षियों को पालना उचित है। कुछ जानवर, जैसे कुत्ते और बिल्लियाँ की अगर अच्छे से देखभाल की जाए, तो उन्हें पालना ठीक है, पर पक्षी, मछलियाँ और जंगली जानवरों को नहीं। स्वतंत्रता उनका हक है। हमें उनसे यह नहीं छीन लेना चाहिए।

-Svasti Gupta 9E

लॉक डाउन में मेरा देश

सोचा न था ऐसा दिन भी आसगा,
मेरा देश लॉक डाउन में भी जासगा।

सूनी हैं सड़कें, बंद हैं बाजार,
न कोई मना रहा खुशियों के त्यौहार।

सारी पाठशालाएँ हैं बंद,
याद आता है स्कूल में एक साथ पढ़ने का आनंद।

घर पर ही करते हैं पढ़ाई,
याद आती है दोस्तों से छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई।

लोगों के काम धंधे हैं मंद,
बाहर से खाना आना है बंद।

माँ बनाती है स्वादिष्ट पकवान,
महक उठता है सारा मकान।

पूरा दिन घर में बिताते हैं,
न किसी से मिलते मिलते हैं।

आ गए हैं दिन सूने,
जा नहीं सकते मौसी से मिलने पूणे।

कर दिया है कोरोना ने मजबूर,
घर पर ही रहना है जरूर।

सब देशवासी मिलकर कोरोना को भगायेंगे,
उन्नत कदम उठाकर देश को खुशहाल बनायेंगे।
- श्रेय गुप्ता (C-बी)

पशु-पक्षियों को पालना...

अनुचित या?

पशु पक्षियों को पालतू रखना, अपने आप में अनुचित नहीं है। ऐसी कई सारी जातियाँ हैं, जो मनुष्य के साथ को तलाशती हैं। किसी बेचारे पशु को घर लाकर, उसे रहने के लिए छत और खाने के लिए खाना देना बहुत अच्छा कर्म माना जाता है।

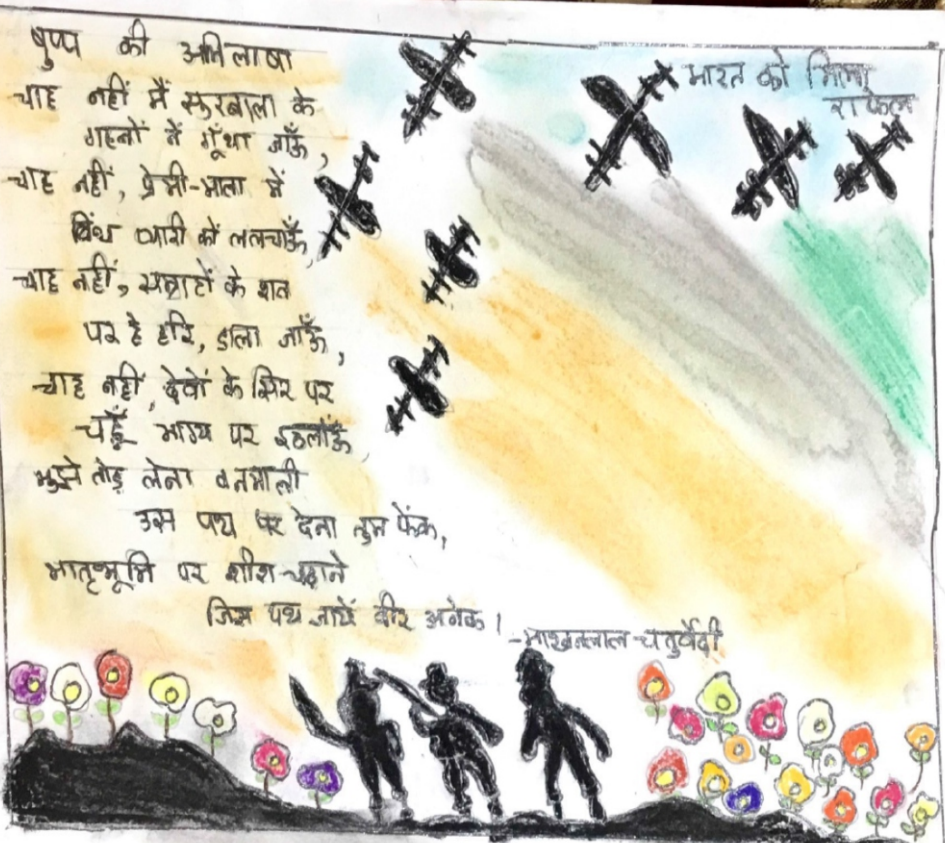
परन्तु दुविधा तब उठती है, जब मनुष्य केवल अपने मनोरंजन और दिखावे के लिए पशु को पालता है। ऐसे लोग अक्सर पशु को अपेक्षित समय और ध्यान देने में असफल रह जाते हैं। इसके कारण पशु बहुत भुगतता है। ऐसे कई सारे जानवर हैं जिन्हें अपने प्राकृतिक वास से छीन लेने पर बहुत कष्ट होता है। जैसे पक्षी खुले आसमान में उड़ने के लिए बने हैं, उन्हें पिंजरे में बंद रखना अनुचित है।

इसलिए पशुओं को पालतू रखने से पूर्व बहुत सोचना और समझना जरूरी है। इस नई जीवन शैली का उन पर प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर अनुसंधान करना अनिवार्य है।



Arushi 9E

जो पाता है जीवन में
रिश्ता
पूरी होती है उसकी हर
इच्छा



अनन्य कपूर - 9E

एक बार दो दोस्त थे, एक लड़का और एक लड़की। एक क्रिसमस लड़के को कई सुंदर क्रिस्टल उपहार में दिए गए थे। लड़की को कई स्वादिष्ट कैंडीज मिली। दोनों को वही पसंद आया जो दूसरे के पास था। लड़के ने लड़की को उसके सभी कैंडीज के बदले में अपने सभी क्रिस्टल देने की पेशकश की। लड़की मान गई। लेकिन लालची लड़के ने अपने लिए सबसे सुंदर क्रिस्टल रखा और लड़की को बाकि क्रिस्टल दिया। ईमानदार लड़की ने बदले में अपनी सभी कैंडीज दीं।

उस रात लड़की शांति और खुशी से सो गई। लेकिन लड़का पूरी रात जागता रहा, क्योंकि वह सोच रहा था कि लड़की ने कौन सी स्वादिष्ट कैंडी अपने लिए रखी है, जैसे वोह अपने आप के लिए सबसे अच्छा क्रिस्टल रखा था। कहानी का नैतिक है, जो आप दूसरों में देखते हैं वह अक्सर खुद का परछाई होता है।



बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ,
देवा मैं माझरता
बढ़ाओ।



बेटी बेटे से कम नहीं
उनके बिना हम नहीं।
बेटियाँ ती हैं ईश्वर का उपहार मत
छोटी इनके जीने का अधिकार।

कविता

वो पिछिया नहीं है रुकने वाली
जिसको कैद कर है रखे
इसके उसके है अटूट
मन में है उड़ने का सपना
चाहे हो कितनी भी बाधा
ना बदलेगा उसका इरादा
आओ हम भी कदम बढ़ाए
उस पिछिया को आजाद कराए
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।



30/8 good

KOYEL DAS, VI C

Koyel Das

